IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, August 2022
Impact Factor: 6.252

भारतीय राष्ट्रवाद और नारीः परम्परागत मूल्यों से सामाजिक पुनर्जागरण तक

डॉ. धीरेंद्र सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र,
राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर, चित्रकूट

शोध सारांश

यह शोध–पत्र भारतीय राष्ट्रवाद के विकासक्रम में नारी की भूमिका का दार्शनिक, ऐतिहासिक और सामाजिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पाश्चात्य राष्ट्रवाद के विपरीत, भारतीय राष्ट्रवाद एक 'आध्यात्मिक इकाई' है, जिसके केंद्र में 'चिति' और 'शक्ति' का सिद्धांत निहित है। शोध के प्रथम चरण में सांख्य दर्शन के 'प्रकृति–पुरुष' और 'अर्धनारीश्वर' सिद्धांतों के माध्यम से नारी को राष्ट्र की सृजनात्मक ऊर्जा (चिदशक्ति) के रूप में परिभाषित किया गया है। द्वितीय चरण में, वैदिक काल की 'अदिति', 'ब्रह्मवादिनी' और 'सद्योवधू' जैसी संकल्पनाओं के माध्यम से नारी की प्राचीन गरिमा और उसकी शैक्षणिक स्वायत्तता को रेखांकित किया गया है। मध्यकाल की सामाजिक चुनौतियों और सांस्कृतिक प्रतिरोध के उपरांत, यह शोध 19वीं–20वीं शताब्दी के 'सामाजिक पुनर्जागरण' पर प्रकाश डालता है, जहाँ सावित्रीबाई फुले से लेकर गांधीवादी युग तक नारी 'परिवर्तन की संवाहक' बनकर उभरी। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, यह अध्ययन सिद्ध करता है कि आधुनिक भारतीय नारी अपनी सांस्कृतिक जड़ों (परम्परा) और वैज्ञानिक प्रगति (आधुनिकता) के मध्य एक सफल समन्वय स्थापित कर 'आत्मनिर्भर भारत' की धुरी बनी हुई है। अंततः, यह निष्कर्ष प्रतिपादित करता है कि राष्ट्र का वास्तविक उत्थान नारी और पुरुष की प्रतिस्पर्धा में नहीं, अपितु उनके 'पूरकता सिद्धांत' और नारी की नैसर्गिक 'चिति' को जागृत करने में निहित है।

मुख्य शब्दः भारतीय राष्ट्रवाद, चिदशक्ति, अर्धनारीश्वर, ब्रह्मवादिनी, सद्योवधू, सामाजिक पुनर्जागरण, प्रकृति–पुरुष, सांस्कृतिक सातत्य, मातृशक्ति, आत्मनिर्भर भारत।